1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अहं सूर्य इवाजनि।
सामवेद 152

मैं सूर्य के समान औजस्वी, तेजस्वी, नियमित जीवन वाल गुणग्राहक और पवित्र हो जाऊं।

May I with Your grace become, Vigorous Lustrous Punctual, recipient of good qualities & pure like the sun.

वर्ष 41, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 अप्रैल, 2018 से रविवार 6 मई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

# दिव्य मातृत्व से ही दिव्य संतान निर्माण संभव

*....आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जागृत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्मभिमुख कर्त्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का यह केवल आज श्रृंगार भोग-विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ-बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग-विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है।...*

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है **'जो करे पुत्र निर्माण माता सोई'** और इसीलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है–

**उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता। सहस्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।**

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती माँ का बोझ नहीं बढ़ाती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि वेदों ने कहा है– **'वीरभोग्या वसुन्धरा'** अर्थात् ये भूमि वीरों के लिए है, कायर व कमजोर लोगों के लिए नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो इस बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरुन्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरुन्धती कहती हैं 'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।' यहाँ स्पष्ट है कि प्राचीन मातायें अयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण की वीरता, शौर्य, राजनीतिकता, प्रभुभक्ति, गोमाता प्रेम, सेवा भाव और धर्मशीलता से आप परिचित हैं, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता, रूप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी। **''सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फहराओ।''**

भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया, भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा-ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवलीदेवी की शिक्षायें हैं। गोरा-बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने तीनों पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को शुद्धोकसि, बुद्धोकसि, निरंजनोकसि, संसार माया परिवर्जितोकसि का उपदेश करके विरक्त बना देती है। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगी तो राजा चिन्तित हो उठते हैं और कहते हैं 'देवि! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो? इसे प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ और उसके अनूकुल ही उपदेश दो। मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार-शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर माता-पिता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियाँ प्रसंगवश पठनीय हैं–

**माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर।**
**माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर हैं।।**
**माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान।**
**माता के सिखाये पुत्र जग में मशहूर हैं।।**

हमारी मातायें, बहनें, आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सरदार भगत सिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखे लालों का निर्माण कर वे अपने महान राष्ट्र को फिर जगद्गुरू बनाने में योगदान दे सकती हैं। इसके लिए उन्हें 'सन्तति निर्माण शास्त्र' का अध्ययन करना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान हैं। गर्भाधान प्रक्रिया के पीछे एक स्वस्थ्य कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन-सहन किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किस-किस प्रकार की लोरियाँ, रहन-सहन आदि किस प्रकार की कहानियाँ, कवितायें, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ आदि किस प्रकार का शिष्टाचार को सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है। **''माता निर्माता भवति''** माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन-जीवन की आधार शिला है परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मातृभूमि भक्ति के रहस्य को जानने के साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द

– शेष पृष्ठ 4 पर

**समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से**

## स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी का जन्म शताब्दी समारोह

**दिनांक : 10 जून 2018 (रविवार) समय : दोपहर 3 बजे से सायं 7 बजे**

**स्थान : मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली**

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, अनेक ग्रन्थों के रचियता स्वामरी दीक्षानन्द जी सरस्वती के 100 जन्मदिवस पर समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस समासमारोह में आर्य जगत के गणमान्य साधु-संन्यासी, राजनेता, आर्य समाजों के पदाधिकारीगण पधारकर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा के साथ उनके पुण्य कार्यों का स्मरण करेंगे।

**आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधाकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाकर पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी के कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करें।**

निवेदक

धर्मपाल आर्य – प्रधान
विनय आर्य – महामन्त्री
विद्यामित्र ठुकराल – कोषाध्यक्ष
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

श्रद्धानन्द शर्मा – अध्यक्ष
डॉ. राकेश कुमार भटनागर – सचिव
समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद

**महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वि जन्मशताब्दी समारोहों के शुभारम्भ के रूप में आयोजित होगा**

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली

**25-26-27-28 अक्तूबर, 2018**

**वर्ष 2018 के महासम्मेलन से अगले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन 2024 दिल्ली तक विभिन्न देशों में होंगे महासम्मेलन और जनजागृति कार्यक्रम**

वेद-स्वाध्याय

# मन्युदेव की महती महिमा

**विजेषकृदिन्द्रइवानवब्रवोऽस्माकं मन्यो अधिपा भवेह।**
**प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ।। -ऋ. 10/84/5**
**ऋषिः मन्युस्तापसः।। देवता - मन्युः।। छन्दः स्वराडार्चीजगती।।**

**शब्दार्थ - मन्यो =हे मन्यो! तं उत्सं विद्मः** = हम उस स्रोत को जानते हैं **यतः आबभूथ** = जहां से तुम उत्पन्न होते हो। तुम **विजेषकृत्** = विजय करने वाले हो और **इन्द्रः इव अनवब्रवः** = इन्द्र 'आत्मा' की तरह तुम भी कभी न दबाई जा सकने वाली आवाज़ वाले हो। **इह अस्माकं अधिपा भव** = तुम इस संसार में हमारे अधिष्ठाता, पालक होओ। **सहुरे** = हे सहनशील! **ते प्रियं नाम गृणीमसि** = हम इस तेरे प्यारे नाम से तेरी स्तुति करते हैं।

**विनय**- हे मन्यो! हम चाहते हैं कि तू हमारे अन्दर रहे, हमारे अन्दर उत्पन्न हुआ करें। हे मन्यो! तू देव है। तू हममे निवास कर। यद्यपि क्रोध भी तुझ मन्यु से मिलती जुलती-सी वृत्ति है, पर असल में क्रोध में और तुममें आकाश-पाताल का अन्तर है। हे मन्यो! तुम देव हो, पर क्रोध असुर है। तुम दोनों का उद्भव-स्थान बिल्कुल उलटा है। हे मन्यो! हम तेरे उद्भव-स्थान को जानते हैं, उस स्रोत को जानते हैं जहां से तू निकलता है। निर्मल मन के मूल में विद्यमान जो विशुद्ध आत्मा है वह तेरा स्रोत है। वहां से तेरा उद्भव होता है, इसलिए तू देव है। क्रोध का उद्भव तो विकारयुक्त मन से होता है, द्वेष-दूषित मन से होता है, दूसरे को हानि पहुंचाने की भावना से होता है। क्रोध में मनुष्य स्वयं पागल हो जाता है, विवेकहीन हो जाता है। दूसरे को हानि-लाभ पहुंचाने की वास्तविक शक्ति क्रोध में नहीं होती। क्रोध निर्वीर्य होता है, पर हे मन्या! तुम तो एक बड़ी प्रबल शक्ति हो, तुम विजय लाने वाली दैवी शक्ति हो। विशुद्ध आत्मा के स्रोत से जो एक इच्छा-सी उठती है, जो एक राम-द्वेष से शून्य इच्छा होती है, जो पाप को हटाने के लिए एक शान्त-गम्भीर प्रबल प्रेरणा होती है, वह एक अद्भुत शक्ति होती है और वही हे मन्यो! तुम्हारा स्वरूप है। उस रूप में तुम जो चाहते हो उसे कोई रोक नहीं सकता। तुम जो बोलते हो उसे कोई दबा नहीं सकता, नीचा नहीं कर सकता। इन्द्र (आत्मा) की भांति ही तुम्हारी आवाज़ भी अदम्य है। तुम्हारे आगे कोई ठहर नहीं सकता। तुम पाप को जड़ से उखाड़ फेंकते हो। इसलिए हे मन्यो! इस संसार में, इस जीवन-संग्राम मं तुम मेरे अधिष्ठाता होकर मेरी रक्षा करते रहो। तुम 'सहुरि' हो, तुममें असीम सहनशीलता है। तुम्हें 'सहुरि' इस नाम से पुकारना मुझे बड़ा प्रिय है। जहां क्रोध ज़रा भी सहन नहीं कर सकता वहां तुममें अनन्त सहनशक्ति होती है; इस कारण से तुम अजेय हो, अन्त में अवश्य ही विजय लानेवाली अखण्डनीय शक्ति हो। हम तुम्हें पुकारते हैं। जब-जब संसार में पाप व अत्याचार के विनाश के लिए तुम्हारी ज़रूरत हो तब-तब तुम मेरे विशुद्ध आत्मा में से प्रकट होती रहो।

**-: साभार :- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

# परमात्मा तो एक ही है, फिर बाबाओं की क्या जरुरत

***....हमारे देश में धार्मिक आस्थाएं बहुत प्रबल हैं। उन पर रत्ती भर भी किसी किस्म की रोकटोक लगभग नामुमकिन है। धर्म के नाम पर कुछ भी कर लेना जायज माना जाता है। पाखंड खड़े होते है। अंधविश्वास घड़े जाते है, इस कारण देश के कोने-कोने में तथाकथित ऐसे साधुसंतों की बाढ़ सी आ गई है जो अपने को भगवान से भी बड़ा मानते हुए धर्म के ठेकेदार बन कर मौज कर रहे हैं। भोलीभाली जनता ही नहीं, अच्छाखासा उच्च शिक्षित तबका भी इनकी तथाकथित ज्ञान, धर्म की बातों में आकर आए दिन अपना सर्वस्व लुटा रहा है।.....***

धर्म जीवन का एक ऐसा अंग हैं जिनकी गहराई का अंत नहीं और ऊंचाई की कोई सीमा नहीं। धर्म मानव के कल्याण मार्ग का वो प्रतिबिम्ब है जिसमें इन्सान स्वयं की अच्छाई बुराई देखते हुए आगे बढ़ता है। लेकिन जब इस प्रतिबिम्ब के बीच कोई कथित बाबा आ जाये तो आस्था अंधी हो जाती है और वो आस्था उस इंसान को पहले बाबा और फिर उसे भगवान बना देती है। इस अंधश्रद्धा के सामने बाबा अपना ऐसा आभामंडल बना लेते हैं कि उनके पीछे चलने वालों की सोचने, समझने और अच्छे-बुरे का फैसला लेने की शक्ति जाती रहती है। धीरे-धीरे बाबा से भगवान बने इंसान अंधभक्तों को अपने इशारों पर ऐसे नचाते हैं, मानो वे जीते जागते मनुष्य न हों, बल्कि उंगलियों पर नाचने वाली कठपुतली हों। लेकिन जब इस आभामंडल का ये मायाजाल टूटता है, तो बाबा के खोल से कोई आसाराम निकलता है तो कोई रामपाल और कोई रामरहीम।

ऐसे ही अब नाबालिग लड़की से बलात्कार के मामले में आसाराम को जोधपुर की अदालत ने दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। यानि कथित भगवान, बापू और बाबा आसाराम को अब मरते दम तक जेल की काल कोठरियों में रहना होगा। आसाराम पर नाबालिग लड़की से रेप का आरोप था। यह मामला 2013 का है। उन पर कई और भी मामले दर्ज हैं। आसाराम पर आशीर्वाद देने के बहाने लड़कियों से छेड़छाड़ और यौन शोषण के आरोप थे। उनके बेटे नारायण साई पर भी ऐसे ही आरोप लगे थे। चंद्रास्वामी, संत रामपाल, नित्यानंद स्वामी, स्वामी भीमानंद, राम रहीम और भी न जाने कितने छोटे-बड़े कथित बाबाओं और संतों के बाद आसाराम पर लगे आरोप हमारे धर्म और संस्कृति पर एक तरह से ये बदनुमा दाग की तरह है।

लेकिन इनके भक्तों को भी क्या कहा जाये? इतना अंधविश्वास जिसके बल पर राम रहीम 1200 करोड़ की प्रॉपर्टी खड़ी कर गया! आसाराम 10 हजार करोड़ की जबकि हमारे वेदों में ईश्वर मनुष्यों पर कृपा करते हैं, वे दयालु होते हैं लेकिन आज उल्टा भक्तों की कृपा से कथित भगवान बने लोग ऐश करते हैं। आशाराम, राधे माँ, राम रहीम, रामपाल व अन्य कई ऐसे ही भगवान हैं, कुछ के घड़े भर गए, कुछ के बाकी हैं। आसाराम और रामपाल जैसे चमत्कारी व महान आलौकिक संत हमारे देश के कोने-कोने में विद्यमान हैं और बड़ी-बड़ी हस्तियां उनके दरबार में शीश नवाती हैं। लोग ही क्यों साल 2013 उत्तर प्रदेश के उन्नाव में एक कथित संत शोभन सरकार के कहने पर किले में दबे खरबों के खजाने को ढूढ़ने के लिए तत्कालीन सरकार ने करोड़ों रुपए खर्च कर तमाम जगह खुदाई करा दी थी।

धर्म के नाम पर अब चारों ओर अंधविश्वास, मनमानी व गुंडागर्दी देश में इस समय चरम पर है और अंधी श्रद्धा में डूबी जनता बार-बार हो रहे हादसों से और बाबाओं के अपराधों से कोई सबक नहीं ले रही है। मशहूर शिरडी के साईं बाबा धाम में, तो लगभग हर साल श्रद्धालुओं के साथ कोई न कोई हादसा होता है। लेकिन इसके बाद लोग लगे पड़े हैं। बीते 2 दशकों की बात करें तो देश भर से 2 हजार से भी ज्यादा ढोंगी साधु-महात्माओं की पोलपट्टी खुली है और उनके कारनामे जगजाहिर हुए हैं। इनमें से 180 साधुसंत तो ऐसे थे जो बाकायदा विभिन्न चैनलों पर अपने आपको चमकाने में व्यस्त थे। आम जनता को सत्संगों व प्रवचनों में शामिल कराने के लिए न केवल तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे हैं, बल्कि चैनल आदि प्रचार-प्रसार माध्यमों का भी सहारा ले रहे हैं। अपने सत्संगों व प्रवचनों में ये तथाकथित भगवान बड़े-बड़े नेताओं, मंत्रियों, अभिनेताओं आदि को बुला कर खुद को चमकाने का कार्य करते हैं।

इन सब पाखंड और अंधविश्वास से दुखी होकर ही आर्य समाज आज चमत्कारी बाबाओं, बंगाली बाबाओं के चमत्कारों से जुड़ी भ्रांतियां दूर करने और तंत्र-मंत्र से जुड़ी सच्चाई सामने लाने के लिए ''अंधविश्वास भगाओ, देश और समाज बचाओ'' कार्यक्रमों के आयोजन आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, स्कूलों, पार्कों आदि में लगातार कर रहा है। आज जितने कथित बाबा दुराचार कर रहे हैं इनसें ज्यादा तो देश में बहुत सारे छोटे-छोटे बाबा, तांत्रिक सक्रिय हैं, जो आज मनचाहा प्यार दिलाने, सौतन-दुश्मन से छुटकारा दिलाने के नाम पर, नौकरी और सब दुखों से एक मिनट में छुटकारा दिलाने के नाम पर न सिर्फ लोगों को हजारों का चूना लगा रहे हैं बल्कि महिलाओं तक के सम्मान को भी निशाना बना रहे हैं। ऐसे लोग छोटे-मोटे जादू टोने लोगों के सामने करते हैं जिससे लोग उन्हें सिद्ध पुरुष समझकर, अपनी गाढ़ी कमाई का हिस्सा सोप बैठते हैं।

आज हर कोई दुखी है। किसी को बच्चे की कमी, तो किसी को कारोबार में घाटा। कोई इश्क में फंसा है, तो कोई घर में ही अनदेखी का शिकार है इस कारण यह लोग देश की जनता को भ्रमित करके अपने झांसा में फंसा कर पैसा लुटने का कार्य कर रहे हैं। इस वजह से आर्य समाज, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा स्कूलों, पार्कों आदि में सुबह-शाम कार्यक्रम आयोजित करके अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता का अभियान चला रही है, ताकि देश से इस तरह की सामाजिक बुराइयों और इनसे उत्पन्न हो रहे अपराधों पर भी अंकुश लग सके। हमारा मानना हैं आज सिर्फ कानून के भरोसे नहीं बैठना चाहिए बल्कि सचेत होकर स्वयं जागरूकता का कार्य करना होगा। क्योंकि अगर मानव बस इतना सा भाव समझ ले कि भक्त और भगवान के बीच अगर भावना का तालमेल बैठ जाए, तो वहां कर्मकांडों का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता। भक्त और भगवान के बीच बस भाव का रिश्ता होता है। ये भाव खुद भक्त भगवान तक पहुंचा सकता है, बिना फल, फूल, आरती, पूजा,आडंबर, बाबा, काबा, साधू, पंथी, पीर के। बस डायरेक्ट कनेक्शन जोड़ने की देर है।

लेकिन हमारे देश में धार्मिक आस्थाएं बहुत प्रबल हैं। उन पर रत्ती भर भी किसी किस्म की रोकटोक लगभग नामुमकिन है। धर्म के नाम पर कुछ भी कर लेना जायज माना जाता है। पाखंड खड़े होते है अंधविश्वास घड़े जाते है इस कारण देश के कोने-कोने में तथाकथित ऐसे साधुसंतों की बाढ़ सी आ गई है, जो अपने को भगवान से भी बड़ा मानते हुए धर्म के ठेकेदार बन कर मौज कर रहे हैं। भोलीभाली जनता ही नहीं, अच्छाखासा उच्च शिक्षित तबका भी इनकी तथाकथित ज्ञान, धर्म की बातों में आकर आए दिन अपना सर्वस्व लुटा रहा है। कहीं मन्नतों के नाम पर तो कहीं पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए बाबाओं के डेरों में भीड़ है। एक पकड़ा जाता है और जनता दूसरे को खोज लेती है। कोई अपने पियक्कड़ पति से परेशान महिला किसी उम्मीद में डेरे में खड़ी हैं। किसी को बेटे की अच्छी नौकरी की तलाश है तो किसी को बेटी के लिए अच्छे वर की तलाश अब साक्षात गुरु का आशीर्वाद हो तो क्या चिंता, क्या भय? आजादी के सत्तर साल बाद भी यदि हम बाबाओं के पैरों में पड़े है तो सोचिये इसमें गलती किसकी है और शर्म किसे आनी चाहिए? सोचना चाहिए कि परमात्मा तो एक ही है, फिर बाबाओं की क्या जरूरत है?

***- सम्पादकीय***

# क्या पुनर्जन्म का वैज्ञानिक आधार है?

***....स्टीवेन्सन समस्त जन्मों को पूर्वजन्म बताते हुए अपना पक्ष रखते हैं कि आमतौर पर बच्चे दो और चार की उम्र के बीच अपनी यादों के बारे में बात करना शुरू करते हैं। जब बच्चा चार और सात साल के बीच होता है तो ऐसे समय में शिशु की यादें धीरे-धीरे कम होती जाती हैं।....***

पुनर्जन्म एक ऐसा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक विषय है जो हमेशा से मानने न मानने के विवाद का विषय रहा है। मसलन पुनर्जन्म को मानने वाले लोग भी रहे हैं और न मानने वाले भी। पर क्या पुनर्जन्म का कोई वैज्ञानिक आधार है? यदि इस सवाल पर आगे बढ़े तो भारतीय फोरेंसिक वैज्ञानिक विक्रम राज सिंह चौहान यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि पुनर्जन्म का वास्तविक स्वरूप है। उन्होंने भारत में फॉरेन्सिक वैज्ञानिकों के अगस्त 2016 में एक राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने कुछ निष्कर्ष भी प्रस्तुत किए थे।

चौहान ने एक छह वर्षीय लड़के की खोज की थी, जो कहता था कि वह अपने पिछले जन्म को याद करता है। वह लड़का अपने पूर्व जन्म के साथ अपने माता-पिता और उस विद्यालय का नाम भी जानता था जहाँ वह पढता था। घटना 10 सितंबर, 1992 की थी उस समय वह अपनी बाइक से घर पर जा रहा था। दुर्घटना हुई, लड़के के सिर में चोटें आई और अगले दिन मर गया।

इस घटना के बाद लड़के का अगला जन्म हुआ और लड़के ने परिवार को अपनी पिछले जन्म की कहानी सुनाई, उसके पिता ने बताया कि उनके बेटे ने दावा किया कि जब वह दुर्घटना हुई थी, तब उसकी किताबों पर खून के निशान लगे थे उसने यह भी बताया कि उसके पर्स में कितना पैसा था। जब यह दावा उसकी पूर्व माँ तक पहुंचा तो उसने रोना शुरू किया और कहा कि उसने अपने बेटे की याद में उसकी खून के दाग लगी किताबें और उसका पर्स ज्यों का त्यों रख लिया था। यही नहीं लड़के ने यह भी बताया था कि उस दुर्घटना के दिन उसनें दुकानदार से उधार में एक रजिस्टर भी खरीदा था।

सबसे पहले विक्रम चौहान ने इस कहानी पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया लेकिन अंतत: उसने जिज्ञासु बनकर इस मामले की जांच करने का फैसला किया। चौहान ने उस दुकानदार के उधारी की बही चेक की तो 10 सितंबर, 1992 को लड़के के नाम पर एक रजिस्टर खरीदा गया था। चौहान ने दोनों लड़कों की लिखावट का नमूना लिया और उनकी तुलना की। उन्होंने पाया कि वे समान थी। यह फोरेंसिक विज्ञान का एक बुनियादी सिद्धांत है कि कोई भी दो लिखावट शैली समान नहीं हो सकती हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की लिखावट में विशिष्ट विशेषता होती है। एक व्यक्ति की लिखावट शैली व्यक्तिगत व्यक्तित्व लक्षणों से तय होती है। चौहान ने इसके बाद कहा ऐसा माने यदि आत्मा एक व्यक्ति से दूसरे में स्थानांतरित होती तो मन-और इस तरह लिखावट एक ही रहेगी। कई अन्य फोरेंसिक विशेषज्ञों ने इस हस्तलिपि के नमूने की जांच की और वे सहमत हुए कि वे समान थे। जाँच जब आगे बड़ी तो वैज्ञानिक जो बच्चे के बौद्धिक विकास की निगरानी कर रहे थे। के सामने सबसे चौंकाने वाला पहलू यह था कि बच्चा इस जन्म में गरीब परिवार में था जहाँ वह कभी स्कूल नहीं गया लेकिन जब उसे अंग्रेजी और पंजाबी वर्णमाला लिखने के लिए कहा गया तो उसने उन्हें सही तरीके से लिखा।

इयान स्टीवेन्सन एक मनोचिकित्सक थे जिन्होंने 50 वर्षों के लिए वर्जीनिया स्कूल ऑफ मेडिसिन के लिए काम किया था। वह 1957 से 1967 तक मनोचिकित्सा विभाग के अध्यक्ष थे, 1967 से 2001 तक कार्लसन के मनोचिकित्सा के प्रोफेसर और अपनी मौत से 2002 तक मनोचिकित्सा के एक शोध प्रोफेसर थे। उन्होंने अपने पूरे जीवन को पुनर्जन्म शोध ा में समर्पित किया था। उन्होंने निम्न सवाल जैसे क्या मृत्यु के बाद जीवन का कोई ठोस प्रमाण है? क्या पुनर्जन्म वास्तव में होता है? क्या मृत्यु के बाद जीवन है और क्या वह जीवन वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है? इन सभी सवालों के बाद वह अंत में अपना पक्ष रखते हुए कहते हैं कि मौत का अनुभव, मौत के भय, आत्मिक चेतना, यादें और शारीरिक चोटें एक जीवनकाल से दूसरी तक स्थानांतरित हो सकती हैं।

इयान स्टीवेन्सन ने दुनिया भर के बच्चों के 3,000 मामलों की जांच की जो पिछले जन्मों को याद करते हुए पाए गये। 40 वर्षों की लम्बी अवधि में बड़े पैमाने पर इयान ने अनेक देशों की यात्रा की। उनके सूक्ष्म शोध ने कुछ सबूतों को प्रस्तुत किया कि ऐसे बच्चों में कई असामान्य क्षमताएं, बीमारियाँ और आनुवंशिक लक्षण पूर्व जन्म के साथ सामान पाए गये।

स्टीवेन्सन समस्त जन्मों को पूर्वजन्म बताते हुए अपना पक्ष रखते हैं कि आमतौर पर बच्चे दो और चार की उम्र के बीच अपनी यादों के बारे में बात करना शुरू करते हैं। जब बच्चा चार और सात साल के बीच होता है तो ऐसे समय में शिशु की यादें धीरे-धीरे कम होती जाती हैं। हमेशा कुछ अपवाद होते हैं, जैसे कि एक बच्चा अपने पिछले जीवन को याद रखना जारी रखता है लेकिन इसके बारे में विभिन्न कारणों से नहीं बोल रहा है।

अधिकांश बच्चे अपनी पिछली पहचान के बारे में बहुत तीव्रता और भावना के साथ बात करते हैं। अक्सर वे खुद के लिए नहीं तय कर सकते हैं कि दुनिया असली है या नकली। वे एक तरह का दोहरा अस्तित्व अनुभव करते हैं, जहां कभी-कभी एक जीवन अधिक महत्त्वपूर्ण होता है, और कभी-कभी दूसरा जीवन। बच्चे की यह अवस्था उस समय ऐसी होती हैं जैसे एक समय में दो टी वी पर अलग-अलग धारावाहिक देखना। लेकिन समय के साथ एक स्मृति धुंधली हो जाती है।

इसके बाद अगर व्यवहार से उदाहरण लें तो यदि बच्चे का जन्म भारत जैसे देश में बहुत गरीब और निम्न जाति के परिवार में हुआ है जबकि वह अपने पिछले जीवन में उच्च जाति का सदस्य था, तो यह अपने नए परिवार में असहज महसूस कर सकता है। बच्चा किसी के सामने हाथ पैर जोड़ने से मना कर सकता है और सस्ते कपड़े पहनने से इन्कार कर सकता है। स्टीवनसन इन असामान्य व्यवहारों के कई उदाहरण बताते हैं। 35 मामलों में उन्होंने जांच की, जिन बच्चों की मौत हो गई उनमें एक अप्राकृतिक मौत का विकास हुआ था। उदाहरण के लिए, यदि वे पिछली जिन्दगी में डूब गए तो उन्होंने अक्सर पानी में नदी आदि में जाने के बारे में डर व्यक्त किया। अगर उन्हें गोली मार दी गई थी, तो वे अक्सर बंदूक से डर सकते हैं। यदि वे सड़क दुर्घटना में मर गए तो कभी-कभी कारों, बसों या लॉरी में यात्रा करने का डर पैदा होता था।

यही नहीं स्टीवेन्सन ने अपने अध ययन में पाया कि शुद्ध शाकाहारी बच्चा किसी मांसहारी परिवार में जन्म ले तो वह मांसाहार के प्रति अरुचि पैदा कर अलग-अलग भोजन खाने की इच्छा व्यक्त करता हैं। अगर किसी बच्चे को शराब, तम्बाकू या मादक पदार्थों की लत है तो वह इन पदार्थों की आवश्यकता व्यक्त कर सकते हैं और कम उम्र में अभिलाषाएं विकसित कर सकते हैं। अक्सर जो बच्चे अपने पिछले जीवन में विपरीत लिंग के सदस्य थे, वे नए लिंग के समायोजन में कठिनाई दिखाते हैं। लड़कों के रूप में पुनर्जन्म होने वाली पूर्व लड़कियों को लड़कियों के रूप में पोशाक पहनना या लड़कों की बजाए लड़कियों के साथ खेलना पसंद हो सकता है।

स्टीवेन्सन कहते हैं कि पुनर्जन्म सिर्फ एक गान नहीं है, यह सबूत के छोटे-छोटे टुकड़े जोड़कर एक बड़ा शोध का विषय है। यह अलग-अलग धार्मिक मान्यताओं के मानने न मानने का सिद्धांत नहीं है। यह एक विषय है जो पुनर्जन्म के सम्बन्ध में सभी अवधारणाओं के साथ आत्मा स्थानान्तरण के लौकिक सत्य को स्वीकार करता है। – ***राजीव चौधरी***

**क्रान्तिकारियों की कथा**

## क्रान्ति-आन्दोलन और अस्त्र संग्रह

अधिकांश भारतवासियों को तो शायद पता ही न हो कि सर्वप्रथम स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय झण्डा 18 अगस्त, 1907 को पश्चिम जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर में मैडम कामा नाम की एक पारसी महिला द्वारा फहराया गया था। इस ऐतिहासिक अवसर पर यूरोप में बसे लगभग सभी भारतीय उपस्थित थे। तत्पश्चात्, जर्मन जनता ने समय-समय पर भारतीय क्रान्तिकारियों के साथ बड़ा सहयोग किया।

इसी आधार पर चन्द महीनों बाद सन् 1908 में शचीन्द्रनाथ सान्याल ने काशी में 'अनुशीलन समिति' नामक क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना की। कुछ समय बाद बंगाल में इसका नाम बदलकर 'यंगमैन्स एसोसिएशन' रख दिया गया। इसका मक़सद ही था अपने प्रचार-कार्य द्वारा अंग्रेजों से टक्कर लेना। काली-पूजा के अवसर पर इस संस्था के सदस्यों द्वारा सफ़ेद काशीफल (कुम्हड़ा अथवा कद्दू) को अंग्रेज मानकर बाक़ायदा गीता की क़सम खाकर ज़िबह किया जाता था।

सन् 1911 में काशी के बंगाली मुहल्लों में 'आज़ाद भारत' और 'हमारा मक़सद' शीर्षक दो इश्तहार बाँटे गए। 12 फरवरी, 1913 को शचीन्द्रनाथ सान्याल के निवास स्थान पर एक गुप्त सभा हुई, जिसमें विलायती माल का बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। तभी सुरेन्द्रनाथ मुखर्जी को काशी नरेश का रिवाल्वर चुराने में बेहतरीन कामयाबी हासिल हुई। इसी रिवाल्वर से उन्होंने मुग़लसराय रेलवे स्टेशन पर भारत के तत्कालीन वाइसराय एवं गवर्नर-जनरल लार्ड हार्डिंज पर गोली दागी थी। दुर्भाग्य यह रहा कि वह बच गया।

उन दिनों काशी के ही एक मुहल्ले मिसिर पोखरा में युगान्तर प्रेस के पीछे रास बिहारी बोस भी रहते थे। वे वहीं से क्रान्तिकारियों का सफल संचालन कर रहे थे। 18 नवम्बर, 1914 को बम बनाते समय वे बुरी तरह घायल हो गये थे, अत: उन्हें तुरन्त ही वहाँ से हटाकर हरिश्चन्द्र घाट पर एक मकान में ले जाया गया।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918) के दौरान क्रान्तिकारियों का पुनर्गठन हो रहा था। उनका दृढ़ विश्वास था कि युद्ध में सफलता मिलते ही अंग्रेज़ अपने वायदे से मुकर जायेंगे, जबकि कांग्रेसियों को आशा थी कि भारत को स्वशासन अवश्य मिलेगा। कालान्तर मं क्रान्तिकारियों की ही धारणा सही साबित हुई। 'रौलट एक्ट' के माध्यम से अंग्रेजों ने गुलामी की ज़ंजीरों को और भी सख़्ती से जकड़ दिया। इस अन्याय और विश्वासघात से देश में असंतोष की ज्वाला धधक उठी। देश भर में जगह-जगह आन्दोलन हुए। इन आन्दोलनों से अंग्रेज-हुकूमत बौखला उठी। इस बौखलाहट के कारण ही जलियांवाला बाग़ का भीषण हत्याकाण्ड हुआ। शासकों की ज़ालिमाना हरकतों ने जनता में आक्रोश की लहर दौड़ा दी। पीड़ित जनता ने चौरी-चौरा थाना फूँक डाला। इस काण्ड के तुरन्त बाद गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। – ***क्रमश:***

***– धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :***
***क्रान्तिकारी आन्दालन के अधखुले पन्ने***

**क्रान्तिकारी आन्देलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।**

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि महत्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा।

रामप्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द का यह सन्देश सुनाकर ''**गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।**'' फाँसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी थी।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आदर्श मानवों के इस अकाल को पुरुष नहीं स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है और 'माता निर्माता भवति' माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। '**मातृवान-पितृवान, आचार्यवान पुरुषो वेदः**' शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता-पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए ''**प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृवान**'' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

रामप्रदसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फाँसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गवर्नर जनरल ने क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फाँसी से छुटकारा देने का आश्वासन दे दिया। रामप्रसाद बिस्मिल की फाँसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और उन्होंने पुत्र-प्रेम से विह्ल हो उसे क्षमा माँगने और भविष्य में स्वतन्त्रता के संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। पाठको! लेकिन एक आर्यवीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भयावली वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था माँ की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हँसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती हैं यही हाल जीव का है। संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानो महामाया है, महाप्रस्थान है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु रामप्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी माँ पहुँची। माँ के पहुँचते ही विस्मिल ने रोना शुरू कर दिया। माँ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। माँ ने बेटे को फटकारते हुये कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना? माँ के इन वचनों को सुनकर वो बिस्मिल अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुये बोला, ''माँ! मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूँ। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मरने के बाद मुझे तुझ जैसी बहादुर माँ की गोद कहाँ मिलेगी?

वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं, उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदालसा, माता देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्र उदाहरण हैं। जिन्होंने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

**नारी नर का निर्माण करे। मनु, व्यास, कृष्ण, राम जैसे पुत्रों को जने।**
**नारी गुण का आधान करे, प्रताप, शिवा, गोविन्द बने।**

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की माँ सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते-करते सो गई। परिणामतः बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज ने राजमाता जीजाबाई ने गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गो-ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरुत्थान करने वाला बने। इसलिए उन्होंने बालक शिवाजी के चरित्र का निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। संत ज्ञानेश्वर की माँ ने भी अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एवं भक्ति से परिपूर्ण बालक का निर्माण किया और समाज हिताय समर्पित कर दिया। '**चिन्ता करितो विश्वाची**' यह वाक्य कहने वाला बालक नारायण की माँ सूर्य की उपासना करती थी। सूर्योपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप बालक की वैसी ही निर्मित हुई, जैसा वह चाहती थी।

माँ मार्गदर्शक होती है। वह जैसा चित्र बालक के मानस पर अंकित करती है, बालक वैसा ही बनता है। एक बार बातों-बातों में बालक नरेन्द्र ने कह दिया कि मैं तो कोचवान बनूँगा। ममतामयी माँ ने तुरन्त स्थिति को संभालकर कहा ठीक है तुम कोचवान ही बनना परन्तु श्रीकृष्ण जैसे। इतना कहकर उन्होंने अर्जुन का रथ हाँकते श्रीकृष्ण का चित्र दिखाया। हम देखते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के रूप में जाने वाला यह बालक हिन्दू तत्व चिन्तन का सारथी बना और उसकी गूँज को विश्व गगन में फैला दिया।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ सन्तति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की हो या विचार होना चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जागृत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्मभिमुख कर्त्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का यह केवल आज श्रृंगार भोग-विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है अपितु समझ-बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग-विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बाँटकर खाने की प्रेरणा माँ ही अन्तःकरण में जाग्रत करती है। जब यहाँ के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्य तत्त्वज्ञान को जीवन में उतार कर, स्वार्थ विहीन, भ्रष्टाचारमुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव माँ के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागरिक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र।

**देवियाँ देश की जाग जाये अगर।**
**युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा।।**

*-डॉ० अर्चना प्रिय आर्य*

**पुस्तक परिचय**

## ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ''ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'' एक ऐसा ही ग्रन्थ है जिसे आप पढ़कर अपने जीवन को सही दिशा दे सकते हैं। इस पुस्तक में ऋषि ने वेदों से सम्बन्धित अनेक विषयों पर प्रकाश डाला है, जैसे विज्ञान, विद्युत, पृथ्वीलोक, सृष्टि उत्पत्ति, गणित विद्या, मुक्ति, तारविद्या, पुनर्जन्म, वेद उत्पत्ति व नित्यत्त्व, स्तुति, प्रार्थना, उपासना और मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य भाष्यकारों के वेद सम्बन्धित ज्ञान की यथार्थता भी प्रकट की है। वेद जिज्ञासु इस पुस्तक को जरूर पढ़े, वेदों को पढ़ने से पूर्व इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक को अवश्य पढ़ें व अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए दें।

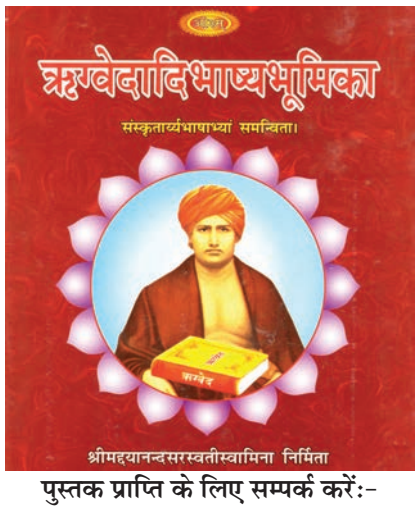


**पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-**
**वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
**15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,**
**मो. नं. 9540040339**

**मातृशक्ति**

## दूध आदि से रोगों का इलाज

गाय के दूध-दही से रोगों की भी निवृत्ति होती है, यह आपको दूध आदि के गुणों से ज्ञात ही हो गया होगा। अब हम अपनी माताओं-बहनों के लाभार्थ दूध आदि के द्वारा कुछ रोगों का इलाज बतलाते हैं-

**1. आँख जी जलन :** गाय के दूध में कई तै की हुई पट्टी भिगोकर आँख पर रखें और ऊपर फिटकड़ी को पीसकर बुरक दें।

**2. हिचकी :** औटाए हुए गर्म-गर्म गाय का दूध पीने से हिचकी बन्द हो जाती है। पुराने चावलों के भात में गाय का गर्म घृत डालकर खाओ। अथवा वैसे ही सुहाता-सुहाता गाय का गर्म घृत पियें। घृत में सेन्धा नमक डालकर सूंघने से भी लाभ होता है।

**3. जुकाम :** गाय के गर्म दूध में मिश्री और काली मिर्च डालकर पीने से जुकाम दूर हो जाता है।

**5. आधाशीशी (सिर दर्द) :** गाय के दूध में बादाम की खीर बनाकर खाने से आधाशीशी का दर्द दूर होता है।

**6. सिरदर्द :** गाय के दूध में सोंठ घिसकर लगाने से भयंकर सिरदर्द भी दूर हो जाता है।

**7. आंव तथा मरोड़ के दस्त :** दही में थोड़ा लवण भास्कर चूर्ण डालकर उसके साथ चावल खाने से मरोड़ व आंव ठीक होती है।

**8. पित्त की शिकायत :** मट्ठे में काली मिर्च तथा देशी खाण्ड मिलाकर पीने से पित्त शान्त होता है।

**9. कफ के कारण पेट दर्द :** सफेद जीरा, पीपल, सोंठ, काली मिर्च, अजवायन, सेन्धा नमक, इस सबको पीस कर मट्ठे में मिलाकर पीने से दर्द शान्त होगा।

**10. कब्ज :** काला नमक, अजवायन पीसकर मट्ठे में मिलाकर पीने से कब्ज दूर होगी।

**11. सभी प्रकार की बवासीर :** चीते के जड़ की छाल को पीसकर कोरी हांडी के अन्दर चारों ओर चिपका दें, और उसी हाण्डी में गाय के दूध का दही जमाएं। इस हाण्डी की दही का मट्ठा कुछ दिन लगातार पीने से सब प्रकार की बवासीर ठीक हो जाती है।

**12. नकसीर :** गाय का ताजा घृत नाक में टपकाने से नकसीर ठीक हो जाती है।

**- आचार्य भद्रसेन**
**साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन**

**आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।**

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी के विभिन्न कार्यक्रम

## दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ का 32 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ के 32वें वार्षिकोत्सव एवं आर्ष कन्या गुरुकुल के द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर 18 मार्च 2018 के समारोह में अति विशिष्ट अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी उपस्थित हुए। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल जी पथिक को सम्मानित भी किया गया।

## चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं ध्यान योग शिविर सम्पन्न

पातंजल योगधाम ज्वालापुर में आयोजित चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं ध्यान योग शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अपने विचार व्यक्त किये तथा योगधाम के संस्थापक पूज्य स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती के 80वें जन्म-दिवस पर उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित की तथा उनके स्वास्थ दीर्घजीवन के लिए प्रभु से कामना व प्रार्थना की।

## गुरुकुल मंझावली, फरीदाबाद का 24वां वार्षिकोत्सव

1अप्रैल 2018 को पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी के विशेष आग्रह पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी गुरुकुल मंझावली, फरीदाबाद के 24वें वार्षिकोत्सव में उपस्थित हुए। समारोह के मुख्य अतिथि हरियाणा के उद्योग मंत्री श्री विपुल गोयल जी ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर अपने विचार व्यक्त किये तथा श्री प्रकाश आर्य जी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुरुकुलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला तथा उपस्थित आर्यजनो से समस्त गुरुकुलों को सदैव यथायोग्य सहयोग देने की अपील की।

## सृष्टि विज्ञान पर आधुनिक वैज्ञानिकों का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार सम्पन्न

सृष्टि विज्ञान पर आधुनिक वैज्ञानिकों के अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री सत्यपाल सिंह जी के प्रयासों से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में 6 से 8 अप्रैल 2018 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सेमिनार में श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागलभीम, राजस्थान के प्रमुख आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी द्वारा वेद विज्ञान विषय पर बहुत ही प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

## पाणिनी कन्या महाविद्यालय का निरीक्षण

सुश्री नन्दिता शास्त्री के निमंत्रण पर 8 अप्रैल 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने वाराणसी स्थित वाणिनी कन्या महाविद्यालय का अवलोकन किया तथा भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से आने वाले निर्धन बच्चों की गुरुकुलीय शिक्षा-दीक्षा तथा आवासीय सुविधाओं के बारे में गम्भीर चर्चा की तथा उन्हें भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया।

## आर्य समाज भोजूबीर के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत-सम्मान

7 अप्रैल 2018 की रात्रि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने वाराणसी में अत्यधिक सक्रिय आर्य समाज भोजूबीर का अवलोकन किया। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारियों ने श्री सुरेश चन्द्र आर्य का स्वागत व सम्मान किया।

# Bad or Self-Destructive Deeds Lead to Darkness

**Veda Prarthana - II**
**Regveda - 7**

**असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन मतसावृता:।**
**ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना:।**

*– यजु. 40/3*

**Asurya naam te loka andhena tamasa vritah. Tanste prety abhi gacchanti ye ke chatmehano janah.**
***- Yajur Veda 40: 3***

- Acharya Gyaneshwarya

The thinking process of human beings at times is very perplexing. A human being may have previously heard or read that certain karmas (deeds) are bad and the end-results or consequences such karmas would be bad. He/she may have even reflected about the karma theory that every deed has future consequences, as you sow so shall you reap. With this existing knowledge, the person has often made a weak resolution in his/her mind that when the occasion comes in the future, "I would refrain from doing bad deeds e.g. I will not lie or cheat to gain money or prosperity". However, for many such persons the bad sanskars (root mental impressions/ desires based on past deeds and their intent) to gain money by any means are so strongly entrenched that despite the warnings of the inner voice to the mind, to stop and reflect on the eventual bad consequences they still cheat or cay out the evil deeds.

After performing bad deeds, many persons (who still has some conscience left) often have remorse over having done the bad deed, and to avoid the bad results of the bad karmas, various persons try to find some sort of penitence. At an individual level, the person may go to houses of worship to pray e.g. temple, church or mosque, recite or chant prayers, use rosary beads to pray, donate some money, go on pilgrimage to 'holy' places, bathe in holy rivers, perform various rituals e.g. havan (fire ceremony). After having performed one or more of the above penitent rituals/deeds, he/she feels that in the bargain "I can now expect to avoid the bad consequences of my previously done bad deeds". Sometimes not fully satisfied by above penitent measures, for an extra protection, he/she personally goes to a priest or a religious guru to ask for further penitent measures to avoid bad results of previously done bad deeds. In turn, the greedy priests/gurus tell the penitent client to perform various charit rituals and donate money to or through them. However, the truth is that all of this penitent bargaining is doomed to failure because according to karma theory one must always bear the consequences of previously done bad deeds; the ritualistic prayers and the priests cannot wish the results away. The only bargain one can strike is that future good karmas will bear good results in the future, but not hypocritical measures.

The Vedas teach us that persons who do not believe in God, the soul and instead of performing good deeds, do various types of bad deeds are self-destructive and despite their lack of belief, in the long haul are still hurting their soul. People who do not follow God's message of truth and virtue, or the teachings of rishis and sages, and instead perform destructive deeds, after their death are reborn in life forms that are less than human such as an animal, bird, insect or a plant. In such states, the individual soul does not have a free will, is not aware of its actions like human beings are, and is covered with the darkness of ignorance. Such life forms in Vedic scriptures are called bhoga-yoni (see next paragragh for details). The individual soul must suffer for a prolonged period before getting the chance to be born again as a human. These are the eventual consequences of being an atheist, self-destructive person who tries to fulfill his/her sensory and mental desires by any means possible even if it requires wrong means such as lying, deceiving or hurting others.

The soul, in the state of bhoga-yoni, is in a state of bondage and can merely bear the consequences of past bad deeds but has no free will nor the ability to perform new deds like normal human beings do, In the state of bhoga-yoni, the animal/creature possessing the soul acts by instinct and can only eat, drink, procreate, join others or fight with other creatures. Such souls cannot think the good or bad consequences of their actions, gain knowledge, or differentiate right from wrong like human beings do, nor can they make progress towards God realization because the latter is only possible when one is born as human being.

The Vedas state the souls like God are immortal and eternal. However, whereas God is Supreme Consciousness, Supreme Bliss, Omnipresent, sarvavyapyaka i.e. omnipresent, an entity that pervades inside each and every particle and place in the universe including our soul. He is aware of everything that is going of even in the most secret recesses of our minds because He resides even inside our souls. God as the Karmaphal data-Final Judge in the Universe gives appropriate awards to all of us depending upon our past and present karmas- deds. On the other hand, even though the souls are conscious, immortal and eternal, the Soul's abilities overall are quite limited because it can be only located at one place at a time and its knowhow and knowledge ae limited. Therefore, as stated earlier persons who do not believe in these fundamental principles are self-destructive because they perform bad deeds to fulfill their desires but expect no bad results of their bad karmas. Irrespective of their beliefs, however, in their remaining current life, and after their death in next lives they will bear the consequences of their previous bad deeds in next lives they will bear the consequences of their previous bad deeds and be born in lower life forms covered with darkness of ignorance.

Dear God, please bless us that we always follow Your teachings of truth and virtue as stated in the Vedas. It is our sincere prayer to You, may we always perform virtuous deeds in our lives so that in our remaining current lives as well as in future lives, when we are reborn, not only avoid life forms less than human (covered with darkness of ignorance) but instead we progress towards attaining Your realization and bliss

**To Be Continue....**

---

**आओ ! संस्कृत सीखें**

## वर्तमान काल के प्रत्यय (51)

**गतांक से आगे....**

| | ए.व. | द्वि.व. | ब.व. |
|---|---|---|---|
| प्र. पु. | ति | त: | न्ति |
| म. पु. | सि | थ: | थ |
| उ. पु. | आमि | आव: | आम: |

**धातु : गम् – अर्थ – जाना : रूप**

गच्छति गच्छत: गच्छन्ति
गच्छसि गच्छथ: गच्छथ
गच्छामि गच्छाव: गच्छाम:

**वाक्याभ्यास: :–**

स: उद्यानं गच्छति। तौ पाकशालां गच्छत:। ते विद्यालयं गच्छन्ति। सा क्रीडांगणं गच्छति। ते देवालयं गच्छत:। ता: महाविद्यालयं गच्छन्ति। त्वं तडागं गच्छसि। युवां कार्यालयं गच्छथ:। यूयं भोपाल नगरं गच्छथ। अहं गृहं गच्छामि। आवां नाट्यगृहं गच्छाव:। वयं उपहारगृहं गच्छाम:।

**विसर्ग के बारे में लेख :–**

‘:’ यह विसर्ग का चिन्ह है और उच्चारण शब्द के अन्तिम स्वर के अनुसार ‘ह’ फ वर्ण से होता है ।

| शब्द रूप | उच्चारण |
|---|---|
| राम: | रामह |
| नीलेश: | नीलेशह |
| जना: | जनाहा |
| बालका: | बालकाहा |
| हरि: | हरिहि |
| कवि: | कविहि |
| पितृभि: | पितृभिहि |
| गुरु: | गुरुहु |
| पत्यु: | पत्युहु |
| गुरो: | गुरोहो |
| रमयो: | रमयोहो |

एष: क: अस्ति? एष: कुत्र अस्ति?
एष: कुत्र निवसति? एष: किं करोति?

**गुण सन्धि :–**

‘अ’ और ‘आ’ के बाद ‘इ , ई , उ , ऊ, ऋ’ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमश: ‘ए , ए , ओ, ओ, अर्’ हो जाता हैं।

उदाहरण :– अ / आ + इ / ई = ए
मम + इव = ममेव
म् + अ + म् + अ = मम
म् + अ +म् +( अ + इ ) + व
(म् +अ) + (म् + ए ) व
म + मे + व = ममेव

*– क्रमश: –*

*आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय*
**मो. 9899875130**

---

**प्रेरक प्रसंग**

## छह मास का रोजा (उपवास)

15 दिसम्बर 1916 की बात है। आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव था। इस अवसर पर एक शास्त्रार्थ भी हुआ। आर्यसमाज की ओर से पूज्य पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी ने वैदिक पक्ष रखा। इस्लाम की ओर से चार मौलवी महानुभावों ने भाग लिया।

मौलवी शरीफ हुसैन ने प्रश्न पूछा कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जीव नया जन्म कैसे लेता है? गर्भ में कितने समय रहता है? पण्डितजी ने इसका उत्तर दिया तो मौलवीजी ने कहा कि एक स्थान पर दिन छह मास का होता है, वहाँ का क्या लेखा होगा? तार देकर वहाँ से पता कीजिए कि वहाँ महीने किस विधि से होंगे! पण्डितजी ने कहा कि अपवाद नियम को सिद्ध करता है। आपके यहाँ भी तो यही झगड़ा पड़ेगा। आपके ‘यहाँ’ लिखा है, “जब प्रात: की श्वेत धारी दिखाई दे तब रोजा रक्खो। तब तो छह मास भूखे मरोगे।”

*– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*
*साभार :*
*तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*

*तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

### आर्य समाज मोलड़बन्द विस्तार का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मोलड़बन्द विस्तार का वार्षिकोत्सव 10 से 15 अप्रैल के बीच बड़े धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत भजन प्रवचन का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ 24 कुण्डीय यज्ञ से हुआ पं. नरेशदत्त आर्योपदेशक ने अपने प्रभावशाली प्रवचन से उपस्थित महानुभावों को नई राह दिखाई। समारोह में लगभग 1100 महानुभावों ने सत्संग का लाभ उठाया। ऋषि लंगर व शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– *गजेन्द्र सिंह चौहान, मंत्री*

### विशाल युवा चरित्र निर्माण का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हमीरपुर एवं सार्वदेशिक आर्य वीरदल पूर्वी उ.प्र. के संयुक्त तत्त्वावधान में आर्य वीरदल पूर्वी उ. प्र. के इतिहास में प्रथम बार 500 आर्य वीरों का 10 दिवसीय विशाल युवा चरित्र निर्माण आत्म रक्षा, व्यक्तित्व विकास योग एवं व्यायाम प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर: आर्य वीर श्रेणी से शाखा नायक सतर तक दिनांक 23 मई से 9 जून 2018 तक, श्री गायत्री विद्या मन्दिर इण्टर कालेज भरुआ सुमेरपुर जिला-हमीरपुर उ.प्र. में आयोजित होगा।

– **आ. सत्यव्रत महाराज, मु.संयोजक**

### रुधिरा ब्लड बैंक का शुभारम्भ

झालावाड़ शहर में रुधिरा ब्लड बैंक का उद्घाटन करते हुए निदेशक डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता ने बताया कि इस ब्लड बैंक में करीब 15सौ यूनिट ब्लड रखने की क्षमता होगी। जन अभाव निराकरण समिति के अध्यक्ष श्री कृष्ण पाटीदार ने ब्लड बैंक का उद्घाटन करते हुए कहा कि जिले में सरकारी ब्लड बैंक तो हैं लेकिन यह निजी क्षेत्र की पहली ब्लड बैंक है। इसमें अब लोगों को प्लेट्सलेट चढ़ाने की सुविधा भी मिल पाएगी। इससे जिले के लोगों को और लाभ मिलेगा। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि भवानीमण्डी के श्री जे के अरोड़ा जी थे। ब्लड बैंक का उद्घाटन कर ब्लड देने की शुरुआत डॉ. भुवनेश गुप्ता व हनीफ चौधरी द्वारा रक्तदान से की गई। इस मौके पर डॉ. पाण्डेय, डॉ. एम. एल. कुलश्रेष्ठ, सुरेश गुप्ता सहित कई डॉक्टर व अन्य जन मौजूद थे।

– *अर्जुन देव चड्डा, जिला प्रधान*

### मानव कल्याण महायज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन

महर्षि दयानन्द सेवा समिति एवं आर्य समाज मन्दिर हिम्मतपुर काकामई के तत्त्वावधान में आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई के शिलान्यास के सुअवसर पर मानव कल्याण महायज्ञ एवं वेद कथा दिनांक 14 से 17 जून 2018 के बीच हिम्मतपुर काकामई (मई बादामपुर), पोस्ट-मुईउद्दीनपुर, जनपद एटा उ.प्र. में आयोजित किया जाएगा। – *विवेक आर्य*

### पुरोहित चाहिए

आर्य समाज हांसी, किला बाजार, वर्षी गेट के अन्दर, जिला- हिसार (हरियाणा) के लिए एक शास्त्री सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव मो. 09812207813 पर सम्पर्क करें। – **कृष्णचन्द्र आर्य, प्रधान**

**सभी आर्यजनों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि इस लेख को फोटोकॉपी कराकर समाज जन सामान्य वर्ग एवं के प्रबुद्ध लोगों तक अवश्य ही पहुंचाकर जागृति पैदा करें। – सम्पादक**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त के तत्त्वावधान में

### नि:शुल्क योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 3 जून 2018 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **सत्यार्थ प्रकाश** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 800 रुपये है। लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 27 मई 2018 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 3 जून 2018 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

***श्री सुखवीर सिंह आर्य, शिविर संयोजक,***
***मो. 09350502175, 09540012175, 07289850272***

### सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

**दिनांक : 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद**
**प्रवेश शुल्क 500/-रुपये** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **ऋषिपाल आचार्य, संयोजक, मो. 09811687124**

### सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

**7 मई से 3 जून,18 : आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (उ.प्र.)**

नियम : शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ⋆शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 27 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। ⋆ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 27 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। **शिविर शुल्क 300/-।** विस्तृत जानकारी के लिए श्री पंकज जायसवाल शिविराध्यक्ष मो. 9415365576 सम्पर्क करें - **-साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका**

### आर्यवीर दल मध्य प्रदेश एवं विदर्भ का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्यवीर दल मध्य प्रदेश एवं विदर्भ के तत्त्वावधान में प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर का 5 से 13 मई के बीच श्री रामलीला प्रांगण, विदिशा में आयोजन किया जा रहा है। शिविर शुल्क 250/- प्रातराश , भोजन व आवास नि:शुल्क होगा। शिविरार्थी की आयु 14 से 25 वर्ष एवं शिक्षा 8वीं पास होना चाहिए। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- श्री जगन्नाथ सिंह आर्य, प्रान्तीय सहायक संचालक मो. 09340983962 **-दिनेश बाजपेयी, प्रान्तीय संचालक, 09425162850**

**अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में**

### 37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 27 मई, 2018

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ***जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री (9810040982)***

### मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** पुन: आरम्भ कर दिया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

**सम्पादक,**
**आर्य सन्देश साप्ताहिक,**
**15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

**साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।**
**– सम्पादक**

### आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

**वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

– ***सम्पादक***

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 30 अप्रैल, 2018 से रविवार 6 मई, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3/4 मई, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 मई, 2018


## इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

## 25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

विश्व की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

*प्रतिष्ठा में,*

## तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

### 68 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

## आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

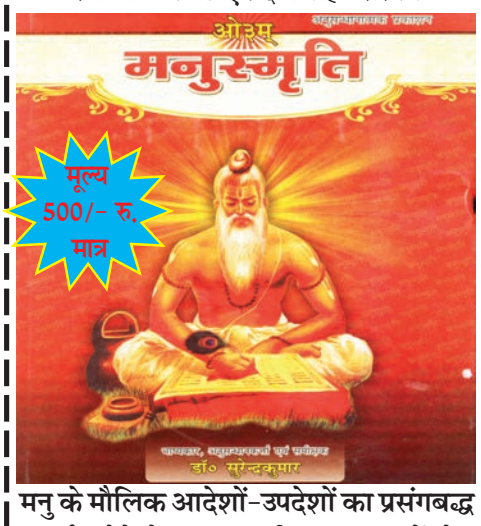


मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,

नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

## आओ जानें ! सत्य? असत्य? आओ पढ़ें ! सत्यार्थ प्रकाश

# आर्य सन्देश

### क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

### यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह